Topic I

① Nature of Ethics.

Surita Kumari
Sub. - Philosophy (S.)
B.A Part - II (S.)

Ans:- नैतिक दृष्टिकोण से नितिशास्त्र का मुख्य लक्ष्य है। नैतिक विचार धाराओं को विस्तार रूप से पालन करना ही (Nature of Ethics) कहलाती है।

नितिशास्त्र में नैतिक कर्म को अपने - अपने ढंग से करने में अपना विशेष रूप से महत्व रहता है। इसी प्रकार अच्छा रिति - रिवाज के अनुसार कार्य करना ही बहुत बड़ा महत्व रहता है। इसी प्रकार अपना महत्व उसी प्रकार पूर्ण होती है। जो आगे की आने वाले दिनों में

देखने में मिलता है। जैसे :- जो जैसे कर्म करते हैं। वैसा ही फल भोगते हैं। अच्छा कर्म करने वाले को अच्छा फल मिलता है। बुरा मानी खराब कर्म करने वाले को खराब फल मिलते हैं। इसी प्रकार हमें देखने को मिलता है। नितिशास्त्र में यही देखने को मिलता है। जो जैसे :-

P.T.O.

काम करते है। सभी जो जैसे कर्म करते हैं वैसे ही फल मनुष्य को मिलता है। नीतिशास्त्र में यह देखने को मिलता है। नैतिक नियम के अधीन काम करना अवश्य फल की प्राप्ति हो या एहसास होता है और बुरे कर्म करने वाले को पाप या गलत फल की की प्राप्ति होती है। यही सब नीतिशास्त्र में देखने को मिलता है। मनुष्य के स्वभाव पर विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट किया जाता है। बुरा कर्म से दुःख या अशुभ फल की प्राप्ति होती है।

(Evil of God)

ईश्वर ने मनुष्य के नैतिक कर्मों के अनुसार उसे मनुष्य के फल की प्राप्ति देता है। यही सब देखने को मिलता है। (Nature of Ethics.)

भारतीय नीतिशास्त्र में यही सब देखने को मिलता है।

भगवान श्रीकृष्ण ने अपना श्लोक में उपमान दिया

समझाया है। ∴ कर्म के अनुसार मनुष्य फल पाता है। जो जैसे कर्म करता वैसा फल भोगता है।

कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदा चना

(वतलाये) मनुष्य जो जैसे कर्म करते हैं। वैसा ही फल भोगते हैं। अच्छे - बुरा फल मनुष्य के नैतिक अनैतिक कर्म के द्वारा ही फल मिलता है। यही सब भावनाओं सब दार्शनिकों ने अपने-अपने ढंग से प्रकट किया है। और अपना मत भी प्रकार पूर्ण करता है।

नैतिक भावनाओं के के द्वारा ही नैतिक अनैतिक फल की प्राप्ति होती यही (Nature of Ethics) में बतलाया गया है।

कर्म के अनुसासार नैतिक अनैतिक फल की प्राप्ति होती है। END.

———— o ————

Scanned with CamScanner